

पद ६१

(राग: काफी – ताल: दीपचंदी)

नरतनु व्यर्थ गमाई । नहीं धूँडा अपना माणिक सांई ॥ध्रु॥ गंगा
गोदा जमुना कृष्णा । सब तीरथ को न्हाई ॥१॥ देवपूजा ऋषिसेवन
किन्हियो । मन कछु निर्मल नाहीं ॥२॥ मनोहर कहे मानिक चरनन
बिन । सार्थक कछु नहीं भाई ॥३॥